



जब हुई मॉर्डन ओलिंपिक्स की शुरुआत

आज ही के दिन 1896 को ग्रीस की राजधानी एथेन में 1,500 वर्ष के बाद पहले आधुनिक ओलिंपिक्स की शुरुआत हुई।

सरकार ने बढ़ाई LPG सप्लाई, बिना अड्डेस प्रूफ के मिलेगा 5 किलो वाला सिलिंडर LPG पर राहत, छोटे सिलिंडर के लिए अब ID कार्ड ही काफी

संयुक्त संघ राज्य क्षेत्र के गैस की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए सरकार ने 5 किलो वाले छोटे सिलिंडरों की सप्लाई में तेजी दी है।



एक्शन प्लान... 50 हजार सिलिंडर जमा और 36 एक्सीस स्टॉक, जमाकर्ता रोकेने के लिए देशभर छापेमारी में

वरी, अग्रजाले और विशाल सप्लाई को गैस सप्लाई में प्राथमिकता दी जा रही है।

प्रतिवर्तन की कटौती की गई कमरांतल गैस सप्लाई में तबि अम लोको को दिक्कत न हो

भारत का 9वां शिप होमर्जुज पार

जन सुल होने के बाद से LPG की सप्लाई पर धिात बढ़ी है। इस बीच रशिया को भरकर जहाज 'बैन अजा' ने तनका के बीच होमर्जुज स्टेट (जलमरुमका) को सफलतापूर्वक पार किया।

तेल के दाम बढ़े, हेलिकॉप्टर बुकिंग महंगी

पेट्रोल पंपों और रियाजानरीयों में तेल का प्यास स्टोक उपलब्ध है।

भारत का 9वां शिप होमर्जुज पार

जन सुल होने के बाद से LPG की सप्लाई पर धिात बढ़ी है। इस बीच रशिया को भरकर जहाज 'बैन अजा' ने तनका के बीच होमर्जुज स्टेट (जलमरुमका) को सफलतापूर्वक पार किया।

इससे पहले जिनका को एक और भारतीय जहाज 'बैन सानदी' LPG लेकर होमर्जुज से गुजरा था।

इससे पहले जिनका को एक और भारतीय जहाज 'बैन सानदी' LPG लेकर होमर्जुज से गुजरा था।

बांग्लादेश में खसरे से पीड़ित 98 बच्चों की तीन हफ्ता में मौत हो गई।

सरकार ने प्रभावित इलाकों में टीकाकरण अभियान तेज कर दिया है।

मंत्रालय ने कहा है कि फिलहाल बिन एंजिनीयों पर फिलहाल भी कोई खतरा नहीं है।

ईरान जंग लंबी चलाने पर जेलरस्की ने अमेरिकी मदद मिलने पर चिंता जताई।

डर है कि अमेरिका की प्राथमिकताएं बदल रही हैं।

ब्राजील में विमान रेस्तरां से टकरा गया

हादसे में पायलट समेत 4 लोगों की जान चली गई।

अब फोटो छपवाने का मौका भी

खबरों का ज्ञान

रोज की खबरों पर कितनी पैनी नजर है, आजमाएं

1. होमर्जुज स्टेट से गुजरे भारत के 9वां जहाज का क्या नाम है?

2. अंटार्कटिका में पहली बार कौन सा देश पहुंचा है?

3. ईरान से बचाए गए दोनो अमेरिकी पायलट को स विमान उड़ाने पर क्या नाम है?

4. 5 किलोवाट के लिए सिलिंडर को खरीदने के लिए अब क्या जरूरी है?

5. कोरिया का नाइट राइडर्स के फेस्टिवल का क्या नाम है?

कल के जवाब

1. B. बर्लिन 2. A. जर्मनी 3. C. 1972 4. C. 150 लख

लकी विनर्स

1. लोकेश राव, कर्नाटक 2. मनीष कुमार, दिल्ली 3. राजेश कुमार, दिल्ली

ऐसे भेजे अपना जवाब

अपने नाम, रहस्य के साथ सवाब भेजें nbtreader@timesofindia.com पर, सवाब में फोटो भी भेजें।

नयासा ने जारी की आर्टिस-2 मिशन से ऐतिहासिक फोटो

53 साल बाद इंसानी आंखों ने देखा चांद का ये हिस्सा

नयासा के आर्टिस-2 (Artemis) मिशन से एक ऐतिहासिक तस्वीर सामने आई है।

नए अंतरिक्ष रिकॉर्ड की ओर

आर्टिस-2 में के अंतरिक्ष जाड़े घाट के पहलें बाय के लिए तैयारी कर रहे हैं।

कर्मचारी के निधन पर भी 10 साल तक परिवार को 50% सैलरी देता है गूगल

गूगल के अनुसार, गूगल को इस पॉलिसी के तहत अगर किसी कर्मचारी का निधन करे तो जता है, तो उसके जीवनसाथी को 10 साल तक उसकी सैलरी का करीब 50% दिया जाके है।

उत्तराखंड: स्कूली छात्राएं बीमार तो बनवाया मंदिर

उत्तराखंड में कोरुबर जिले के डरमसिंह कॉलेज के एक कक्षा में बीमार छात्राओं को देखकर छात्रों ने एक मंदिर बनवाया।

शोध भी परिवार को

पारितोषी की रक्षा का तब तक है कि कर्मचारी को परिवार में मिलने वाले कर्मचारी को शोध कर दिया जाते हैं।

कोर्पोरेट में मिसाल

कोर्पोरेट सेक्टर में ऐसे सुविधाएं बहुत कम देवने को मिलती हैं।

बच्चों को आर्थिक सहाय

कॉर्पोरेट में बच्चों को नयासहायता नहीं प्रभावित न हो।

रोती पीड़ित अफ्रीकी महिला का विधियो एक अफ्रीकी महिला अफ्रीकी एक अफ्रीकी महिला अफ्रीकी

एक अफ्रीकी महिला अफ्रीकी एक अफ्रीकी महिला अफ्रीकी एक अफ्रीकी महिला अफ्रीकी

पटना रेलवे स्टेशन: नॉर्थ-ईस्ट के लोगों पर नस्ली टिप्पणी

NBT रिपोर्टर: बिहार के पटना रेलवे स्टेशन पर अग्रजाले प्रेस के एक सफाईकर्ता ने एक नस्ली टिप्पणी की।

विधियो वायरल होने के बाद लोगों में घबराहट आरंभ देखा गया

इसने एक बार फिर लोगों के साथ होने वाले घटनाओं के बारे में घबराहट देखा।

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े

NBT रिपोर्टर: कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े।

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े।

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े।

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े।

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े।

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े।

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े

कानपुर में अश्लील फिल्मों के तार अपराधियों से जुड़े।

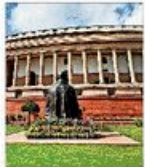
नवभारत टाइम्स • विचार

नवभारत टाइम्स | नई दिल्ली/एनडीआर | सोमवार, 6 अप्रैल 2026

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देना ही हमारा लक्ष्य है, यह लोकतंत्र की पूर्ण शक्ति है।
- मिशेल बैस्ले, विली की पूर्व राष्ट्रपति

अब और देरी नहीं

साल 2011 की जनगणना के मुताबिक भारत की जनसंख्या में महिलाओं की आबादी 48.5% थी। अनुमान है कि पिछले करीब दशक में इसमें कुछ सुधार ही हुआ होगा, लेकिन जो नहीं बढ़ल, वह ही देश की संसद और राज्य की विधानसभाओं में महिलाओं की हिस्सेदारी। नारी शक्ति बंदन अभियान (महिला आंदोलन) इसी स्थिति को बदलने वाला कामना है और इसके फल व लाभ होने में देरी नहीं होनी चाहिए।



महिला आरक्षण किल

कमजोर प्रतिनिधित्व। अंकड़े बनते हैं कि राजनीति में महिलाएं महत्वपूर्ण तो रही, पर ज्यादातर केवल बैंक के नजरिये से। इनको उचित प्रतिनिधित्व आज भी नहीं मिल पा रहा है, जबकि हर क्षेत्र में समाज अधिकारी की बात की जाती है। मौजूदा लोकसभा में फल 14% महिला संसद है, जबकि और केंद्र शासित प्रदेशों की विधानसभाओं में तो स्थिति और खराब है - महज 10% महिला विधायक। और जब महिलाओं को मौका ही नहीं मिलेगा, तो यह सुधार कैसे।

लंबा इंतजार। भारत ने अपनी आबादी के साथ ही महिलाओं को पुरुषों के बराबर शक्ति का अधिकार देकर दुनिया के सामने नारी पेश की थी, पर इसके आगे कदम - राजनीति में उनकी बराबर भागीदारी में देश पीछे रह गया। साल 1996 में एचडी देवीगौड़ा की सरकार में नारी पहल महिला आरक्षण बिल लाया गया था और तब से पहली दसकों में नार आरक्षण प्रकस हो चुके हैं। अब सरकार ने बिल पास करने के लिए 16 से 18 अर्थव्यवस्था को संसद का विशेष सत्र बुलाया है।

लोकतंत्र में संतुलन। पीएम नरेंद्र मोदी ने केवल में एक चुनौती रली में महिलाओं से विपक्षी दलों पर दबाव बनाने की अपील की, तबकि संसद में महिला आरक्षण बिल विना किसी विशेष के पास हो सके। आदर्श स्थिति तो यह होगी कि बिल को हर दल का साथ मिले, दबाव बनाने और विपक्ष की नीकत ही न आए। देर से ही शक्ति, कम से कम अब इस काम को अग्रिम तक पहुंचाना चाहिए।

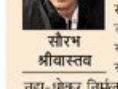
नौशियों पर असर। जब सदन में ज्यादा महिलाएं होंगी, तो आपा आबादी से जुड़े मुद्दों को ज्यादा ध्यान मिलेगा। उनकी समस्याओं पर ज्यादा सटीक और संवेदनशील चर्चा हो सकेगी, जिससे नितियां बनाने में मदद मिलेगी। महिलाओं की अनुपस्थिति उपलब्धता के बावजूद राजनीति उन कुछ क्षेत्रों में है, जहां उन्हें समर्थन नहीं मिलेगा। महिला आरक्षण बिल इस काम को दूर करेगा। इस बदलाव का असर पूरे समाज पर पड़ेगा। महिला आरक्षण का सफल निर्वाह संसद का बंधन है, भारत के लोकतंत्र को और संतुलित व व्यवस्थित बनाने का पथ है।

नशतर

गबबर का आश्रम

गबबर ने संध्या से पूजा, 'किताब इनाम रखे है सरकार हम पर?' 'सरदार, पबबर हजा', करते हुए संध्या का मन बुरा-बुरा गया। 'बस! रुपया किताब ही गया। सरकार को कुछ तो सेवना चाहिए, इंडस्ट्री तो कोई मुझे फकने दे रही आता।' गबबर के सूर में धक्का भी था।

कुछ दिनों बाद किताब मनाने में सदन भांग डराई कि गबबर को जिंदा या मृत्यु फकने की रकम बढ़ाई जाए। कम रकम होने के कारण यह पकड़ा नहीं जा रहा। मंत्रीजी ने कहा कि यह भांग वित्त मंत्री तक पहुंचा दी गई है। गबबर यह सुनकर खूब दुःख हुआ। बजट वाले दिन वह नाह-फेकर निरस्त हुआ और टीवी के खबरों के गमना। मंत्रीजी बजट पेश कर रही थी। काफी देर बाद बजट का बकर आया। मंत्रीजी ने कहा, 'गबबर को फकने पर अब कोई इंतजार नहीं है। हमारी सरकार ने उड़ते खबर कर दिए हैं। मैंने SIR के बाद बजट की नई जोड़ियां दिखा दीं। गबबर का नाम ही नहीं है। इसका मतलब गबबर ही नहीं। अब गबबर नहीं है तो इनाम कैसा?' सदन में तालियां बजी, पर बजट में गबबर का गलत रंग गया। उसने संध्या और कलिका से कहा, 'संधिया के मुताबिक बड़ी लूट करनी पड़ेगी, तब सरकार हमें जिंदा भांगेगी।' अगले रोज गबबर का गैंग शहर पहुंचा। गबबर ने बैंक में धुसकर पैसे भर के कहा, 'सारे रुपये हमारे हवाले कर दो।' पैसे भरने पर 20-25 हजार रुपये लाकर रख दिए। कहा, 'तो जाओ, रुपया इनाम फिर गया है कि इन पैसे से अब एक स्कूटी भी नहीं आती।' उसे भी ज्यादातर लोग UPD इनामिल करते हैं, न बैंक निगलते ही न जाने जा सकते हैं। हमें इतने से पैसे के लिए रोज बैंक आना पड़ना है। हम इन्हें लूट में दिखा दें, जांच करने तक रहत मिलेगी।' गबबर ने पैसे छोड़े और डराव मन से अपने अड़े पर चला गया। कुछ दिन बाद बजट में एक बजट लगा - गबबर बाबू के अक्षय का वरत इपर है। मन की शक्ति का बैंक-एक लाख रुपये से शुरू।



सीमर श्रीवास्तव

गबबर ने संध्या से पूजा, 'किताब इनाम रखे है सरकार हम पर?' 'सरदार, पबबर हजा', करते हुए संध्या का मन बुरा-बुरा गया। 'बस! रुपया किताब ही गया। सरकार को कुछ तो सेवना चाहिए, इंडस्ट्री तो कोई मुझे फकने दे रही आता।' गबबर के सूर में धक्का भी था। कुछ दिनों बाद किताब मनाने में सदन भांग डराई कि गबबर को जिंदा या मृत्यु फकने की रकम बढ़ाई जाए। कम रकम होने के कारण यह पकड़ा नहीं जा रहा। मंत्रीजी ने कहा कि यह भांग वित्त मंत्री तक पहुंचा दी गई है। गबबर यह सुनकर खूब दुःख हुआ। बजट वाले दिन वह नाह-फेकर निरस्त हुआ और टीवी के खबरों के गमना। मंत्रीजी बजट पेश कर रही थी। काफी देर बाद बजट का बकर आया। मंत्रीजी ने कहा, 'गबबर को फकने पर अब कोई इंतजार नहीं है। हमारी सरकार ने उड़ते खबर कर दिए हैं। मैंने SIR के बाद बजट की नई जोड़ियां दिखा दीं। गबबर का नाम ही नहीं है। इसका मतलब गबबर ही नहीं। अब गबबर नहीं है तो इनाम कैसा?' सदन में तालियां बजी, पर बजट में गबबर का गलत रंग गया। उसने संध्या और कलिका से कहा, 'संधिया के मुताबिक बड़ी लूट करनी पड़ेगी, तब सरकार हमें जिंदा भांगेगी।' अगले रोज गबबर का गैंग शहर पहुंचा। गबबर ने बैंक में धुसकर पैसे भर के कहा, 'सारे रुपये हमारे हवाले कर दो।' पैसे भरने पर 20-25 हजार रुपये लाकर रख दिए। कहा, 'तो जाओ, रुपया इनाम फिर गया है कि इन पैसे से अब एक स्कूटी भी नहीं आती।' उसे भी ज्यादातर लोग UPD इनामिल करते हैं, न बैंक निगलते ही न जाने जा सकते हैं। हमें इतने से पैसे के लिए रोज बैंक आना पड़ना है। हम इन्हें लूट में दिखा दें, जांच करने तक रहत मिलेगी।' गबबर ने पैसे छोड़े और डराव मन से अपने अड़े पर चला गया। कुछ दिन बाद बजट में एक बजट लगा - गबबर बाबू के अक्षय का वरत इपर है। मन की शक्ति का बैंक-एक लाख रुपये से शुरू।

एकदा

बदलाव की हिम्मत

रोजा पार्सन का जन्म 1913 में अमेरिका के Tuskegee शहर में एक रसायन परिवार में हुआ था। उस समय अफ्रीका में काले और गिरे लोगों के लिए अलग-अलग स्कूल, रेस्तरां और वसों की सृष्टि थी। बचपन से ही वह अलग-अलग के कारण रोजा के मन में समाधान और न्याय की भावना मजबूत हो गई। 'दिसंबर 1955 को Montgomery में एक ऐसी घटना घटी, जिससे इतिहास बदल दिया। रोजा पार्सन का मन से लौटते समय वह नई थी। निम्न था कि गिरे-खिंचे के लिए काले लोगों को अपनी सैट छोड़नी पड़ती थी। जब बस वापस ने रोजा से सैट छोड़ने को कहा, तो उन्होंने शांत लेकिन दृढ़ता से मना कर दिया। वह अनाथ के खिलाफ सार्वजनिक प्रतिरोध था। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन इस घटना ने पूरे शहर में आंदोलन की शिफारी फैला दी। अफ्रीकी-अफ्रीकी समुदाय ने बसों का बहिष्कार किया, जिसे Montgomery Bus Boycott कहा जाता है। लम्बा 381 दिनों तक इस आंदोलन का नेतृत्व Martin Luther King Jr. ने किया। उसी में अग्रदत्त ने बसों में नस्लीय भेदभाव को अंतर्निहित खोप कर दिया। रोजा पार्सन का सहज सह सहित कहना है कि एक रसायन व्यक्तित्व भी समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकता है।



रोजा पार्सन

रोजा पार्सन का जन्म 1913 में अमेरिका के Tuskegee शहर में एक रसायन परिवार में हुआ था। उस समय अफ्रीका में काले और गिरे लोगों के लिए अलग-अलग स्कूल, रेस्तरां और वसों की सृष्टि थी। बचपन से ही वह अलग-अलग के कारण रोजा के मन में समाधान और न्याय की भावना मजबूत हो गई। 'दिसंबर 1955 को Montgomery में एक ऐसी घटना घटी, जिससे इतिहास बदल दिया। रोजा पार्सन का मन से लौटते समय वह नई थी। निम्न था कि गिरे-खिंचे के लिए काले लोगों को अपनी सैट छोड़नी पड़ती थी। जब बस वापस ने रोजा से सैट छोड़ने को कहा, तो उन्होंने शांत लेकिन दृढ़ता से मना कर दिया। वह अनाथ के खिलाफ सार्वजनिक प्रतिरोध था। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन इस घटना ने पूरे शहर में आंदोलन की शिफारी फैला दी। अफ्रीकी-अफ्रीकी समुदाय ने बसों का बहिष्कार किया, जिसे Montgomery Bus Boycott कहा जाता है। लम्बा 381 दिनों तक इस आंदोलन का नेतृत्व Martin Luther King Jr. ने किया। उसी में अग्रदत्त ने बसों में नस्लीय भेदभाव को अंतर्निहित खोप कर दिया। रोजा पार्सन का सहज सह सहित कहना है कि एक रसायन व्यक्तित्व भी समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकता है।

यूनस के असहज करने वाले दौर को पीछे छोड़ने को तैयार नई दिल्ली और ढाका ये रिश्ता अच्छा कहलाता है

बांग्लादेश के नैशनल डे पर वीने दिनों समने आई यह तस्वीर पड़ोसी देश के साथ संबंधों में यू-टर्न की गवाह बनी। इस तस्वीर में बांग्लादेश के जवज्ज रिखान हमीदुल्लाह, भारत के विदेश राज्य मंत्री कौशिक चिन्मय और विदेश सचिव विक्रम मिश्री की नाडी लेनेवन में जो दिख रहा है, उसे द्विपक्षीय संबंधों में 'सहन' कहते हैं। कुछ महीनों पहले तक हाई कमिशन में ऐसी तस्वीर की कल्पना नहीं की जा सकती थी।



अल्पयु सिंह

बदल रहा माहौल। ढाका में नई सरकार आने के बाद हुए इस कार्यक्रम में जहां पुष्पा कलितमेशो दिखी, तो जवज्ज रिखान हमीदुल्लाह, भारत के विदेश राज्य मंत्री कौशिक चिन्मय और विदेश सचिव विक्रम मिश्री की नाडी लेनेवन में जो दिख रहा है, उसे द्विपक्षीय संबंधों में 'सहन' कहते हैं। कुछ महीनों पहले तक हाई कमिशन में ऐसी तस्वीर की कल्पना नहीं की जा सकती थी।



प्रत्यागण की भांग उड़ाई गई। रिशती की परीक्षा। अप्रैल 2024 से इस साल फरवरी तक ढाका और दिल्ली के बीच कूटनीतिक असहजता रही। चीन डौरे में यूनस ने किनेन नेक और सेमिन सिस्टर्स पर विवादित बयान दिया। पेशिया के साथ नवदोकी हो य फिर हिंदू अल्पसंख्यकों का मुद्दा, यूनस के डौर में कई विषयों में टाक-बाई दिल्ली के रिशती की परीक्षा ली और भारत के लिए कूटनीतिक तौर पर चुनौती पेश करते रहे। दोनों तरफ के बयानों से राफ का कि चुनौती के करते आने वाली सरकार की गैरसहजता में बांग्लादेश के साथ सम्बन्ध डेजवैमेट मुश्किल नहीं। और तब तक विमटेक रफिनेट में मोहम्मद यूनस और पीएम कौशिक की मुलाकत से भी रिशते

पर जमी कई पिलल न सकी। गलतियों से सबक। इस संदर्भ में वीने साल नवंबर में मौजूदा विदेश मंत्री और इस वक्त राष्ट्रीय सुरक्षा सहायकार रहे खलतौर रहमान की भारत यात्रा का संवेधों में आए डेजवैमेट का दूर करने की एक कोशिश की तरह देखा गया। इस डौर से बांग्लादेश ने नए रिसे से डेजवैमेट का संकेत दिया। हालांकि नवंबर में इस यात्रा के बाद चुनावी प्रचार और गर्भमर्ग में भारत विरोधी तौर भी सुने गए। हसीना के सता से हटने के बाद के हालातों को पढ़ने और रिफ्ट करने में देरी की गलती भारत इस बार नहीं कर पाता था। भारत इस बार बांग्लादेश चुनाव के बाद के हालात से निपटने के लिए तैयार था। भारत की तैयारी। जगल हो य

वीएनपी, बांग्लादेश में इलेक्शन के दौरान भारत सभी पक्षों के संपर्क में रहा। खासिदा नियम के इंतकाल के बाद सेवदना जाहिर करने के लिए खुद विदेश मंत्री जयशंकर शर्मा गए थे। बांग्लादेश की दो प्रतीय राजनीति में से शेख हसीना की गैरसहजता के बीच बनने वाले रिश्ताको हालात के लिए नररखार भारत के बीच अब भी कई ऐसे मुद्दे हैं, जो असहज कर सकते हैं। वीएनपी की परिपक्वता तौर पर फाकिरतन से नवदोकी ली है, लेकिन नररखार दिवस पर पाक फौज को लेकर जाहिक रहमान का बयान काफी कुछ कणज। पेशिया एशिया संकेत के दौरान जहां आपुति में रहयोग जेरी मुद्दे को नररखा बांग्लादेश जैसे पेशी मुद्दे के लिए भी आबात नहीं, जबकि पेशिया एशिया के कई देश भारत को और नजर लगाए हैं। नया मोका। उरई हनेन बांग्लादेश के विदेश मंत्री खलतौर रहमान भारत डौर पर होंगे। एजेंडे में जल बंडवारे से लेकर तषम तरह के मुद्दे हैं। भारत इस डौर को रिशते में खुलेपन का लिए देवने की कोशिश करना, खासकर ऐसे वक्त जब अपना में की राजनीति से अलग नाक अफान में अश्री तक भारत को लेकर किसी तरह की नकायामफकत नहीं दिखाई है। वीने भी भारतीय डिप्लोमैसी नेवें काफी समर्थ से युद्ध के साथ रिशते को सुधरी बिच पर लने की कोशिश करती ली है।

सफ़र का सरप्राइज है बगल की खाली सीट

डॉनल्ड ट्रंप इंगन में रेजीन बदलना चाहते हैं तबकि मिड टर्म इलेक्शन में जीत के साथ अपनी सैट पर और मजबूती से जम जाएं। नेनव्हाह को इंगन में कुर्सी बदलनी नहीं, तबकि डौर में ही तबकि इनामिल में जब कभी चुनाव हो, तो उन्हें ही सबसे ज्यादा सैट मिले। और इंगन को तो लगना ही है, वही राजनीतिक से धार्मिक नैतय तक, कहां कोई सैट नहीं बचेगी। घुम-फिक्कर हर जगह रात पकता आ जाता है कुर्सी या सैट का। अब अगर यही सैट विना भांगे मिल जाए तो... ट्रेन में ही सही।



जीवन आनंद सैट पर पाठेय

जाए, तो लगना है कि रखर अचानक साधारण से असाधारण हो गया। काल की सैट का खाली सैट एसा सरप्राइज है, जिस पर पहले यकीन नहीं होता। जैसे-जैसे ट्रेन के चलने का समय होता है, मन में यह सवाल उठने लगता है कि क्या इस पर कोई है? और जब ट्रेन प्लेटफॉर्म छोड़ने लगती है और बीच के पीटर सारे यकीन अपनी जगहों पर आ जाते हैं, तब जगह भरेश होना है अपनी किमती पर। और तब वह जगह इतनी कीमती हो जाती है इतने रिक्कि कि उसके खोने का भी डर लगने लगता है। जब की किसी ट्रेजिन पर ट्रेन रुकती है, तो क्या फकर उठती है मन में कि कहीं कोई फॉन न आ जाए। यही तो इंगनी फितरत है, अस्थायी वंचनों से मोह।

नया की खाली सैट बस एक सैट न हो जाना तब, वह निजी संस्कार बन जाती है। लगना है कि वह खोज-खोज का हथियार हो है। बिना किसी डिप्लोमैसी बिना किसी सफ़रीते के उस कोने का इस्तेमाल कर सकते हैं हम। खाली सैट केवल स्पेस नहीं, फ्रीडम लेकर आती है। भीड़ भरी दुनिया में सभी अपनी जगह के लिए लड़ते रहते हैं - बसों में, प्लेन में, अफिस में, समाज में और यहां तक कि रिशते में भी। सभी को अपनी पहचान चाहिए, अपना परसल स्पेस। काल की खाली सैट यही है और उमरक कुछ डेर का साथ भी जब देते हैं कि स्पेस किताब जरूरी है।

कांटे की बात

ईरान अमर स्ट्रेट ऑफ होर्नुंग का नहीं खोलाता है तो अमेरिका उसके पासर प्लांट्स और पुजो पर हल्ला कर सकता है। हम ऐसे इन्फ्रास्ट्रक्चर को उवाह कर सकते हैं। अमेरिका तब ईरान को नरक की तरह बना देगा।

अमेरिका की आफत

- 1 अरब डॉलर हर दिन खर्च कर रहा अमेरिका
- 3 करोड़ डॉलर रोजाना हवाई अभियान पर खर्च
- 80 करोड़ डॉलर के इन्फ्रास्ट्रक्चर को नुकसान
- 100+ टिकांकी मिसाइलें उपयोग की गईं
- 35 लाख डॉलर एक टिकांकी की कीमत

ईरान युद्ध में रोज स्वाहा हो रहे अरबों डॉलर

ईरान युद्ध में रोज स्वाहा हो रहे अरबों डॉलर

ईरान की चिंता

- \$293 अरब डॉलर हफ्ते नुकसान
- \$72.5 करोड़ के हवाई अभियान
- \$20 करोड़ रोज इंटरसेप्टर पर खर्च
- \$55 अरब डॉलर युद्ध का बजट
- 177 अरब डॉलर का GDP घटा

जनात जंखान

हरफारस

हरफारस

हमारे सामने है पूंजीवाद का भयानक चेहरा

पूंजीवादी खोपियों के दुनिया के अलग-अलग कोने में पहुंचने से लेकर पहले विषयवृद्ध के बाद पैदा हुए संघर्षों के बारे में लिखा गया है। नेकसन यह भी लिखते हैं कि पूंजीवाद की इस चर्चा में पांडित्य लाना, आइकनो स्ट्रुटन और व्वाचमैरी लेनिन आदि अग्रदत्तों के गवाह रहे। वह लिखते हैं कि चांदी की खानों से जो अंतरराष्ट्रीय पूंजी व्यवस्था शुरू हुई, उसने पूंजीवाद के प्रकार में निर्णायक भूमिका निभाई। इसमें दारात, फ्रेडरिड-डॉलर से औद्योगिकीकरण में आई तेजी और सार्वजनिक वकसे पूंजीवाद के लगातार बढ़ते जाने का भी चिक है। किताब में बताया गया है कि स्पेन और फ्रांस के दक्षिण और डेंजर अफ्रीका के इस्कांड पर कब्जे से वकसे ख्याबर में तेजी आई। इसमें मैक्सिमो की चांदी सैट प्रॉडक्ट्स, बिसरे वीगिंग और पब्लिकल प्रॉडक्ट्स वजुद में आए। नेकसन ने नॉंदरलेड में ट्युफिन और चैनी मजदूरों पड़ों को लेकर बने वक्तुले का चिक्र भी किया है। वह कहते हैं कि यह उरत तक की शुरुआत है। किताब में लिखा है कि अफ्रीका में गृहयुद्ध खत्म होने

हमारे सामने है पूंजीवाद का भयानक चेहरा

विचार विंडो

उभरकर आया है। उनका गद्य पढ़ने के लिखान से आबात है और इसी वकसे से एक वेहद उत्प्रेरक हुए विषय के बारे में पढ़ने वकन वह रोसंस का ध्यान बांधे रहते हैं। नेकसन का पूंजीवाद की आलोचना के साथ इसकी अग्रदत्तों वाली को भी इसमें रखा है। वह कहते हैं कि किस तरह से इसके कारण डिप्लोमैसी में आरंभिकत बेवती आई। लेकिन साथ ही, वह उपनिवेशवाद, दास प्रथा और दूसरे शोषण की आलोचना भी करते हैं।

रीडर्स मेल

NOTE :-

[: राजस्थान पत्रिका , दैनिक जागरण delhi, नवभारत टाइम्स delhi, अमर उजाला delhi, हिन्दुस्तान delhi, Pioneer hindi delhi, जनसत्ता delhi,]

English NEWSPAPERS

[Times Of India delhi, Indian Express delhi, The Hindu delhi, Financial Express delhi, economic times delhi , the Pioneer english delhi , the tribune delhi] ETC.

We are providing all news paper pdf hindi and English want to read daily newspapers by pdf please msg me on telegram

2. आकाशवाणी (AUDIO)

whatsapp Group ka link pane ke liye
Newspaper_pdf_bot par jaye.

Click here to contact:-https://t.me/Newspaper_pdf_bot

Or type in Search box of Telegram

@Newspaper_pdf_bot And you will find a channel

BACKUP GROUP LINK

<https://t.me/joinchat/5P9EL1JaQoYzNTI1>

Hindi-English News Paper

Website:- onlineftp.in